

मनोविज्ञान आधारित विश्लेषण: अभिभावकीय शैली और बच्चों के आत्मविश्वास का संबंध

मीनाक्षी यादव

सहायक प्राध्यापक

अग्रसेन कॉलेज

धनोरा, दुर्ग, छत्तीसगढ़



<http://www.gjiirp.org/> || Vol. 2 No. 3 (2026): Special August Issue

Date of Submission: 15-07-2026

Date of Acceptance: 31-07-2026

Date of Publication: 20-08-2026

सारांश— अभिभावकीय शैली बालक के व्यक्तित्व, आत्ममूल्यांकन, निर्णय क्षमता और सामाजिक व्यवहार के निर्माण में केंद्रीय मनोवैज्ञानिक भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन, कठोर नियंत्रण, उपेक्षापूर्ण व्यवहार तथा स्वायत्तता-समर्थक अभिभावकीय व्यवहार और बच्चों के आत्मविश्वास के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन विशेष रूप से इस प्रश्न पर केंद्रित है कि समान अनुशासनात्मक व्यवहार अलग-अलग पारिवारिक संवाद तथा भावनात्मक वातावरण में बच्चों के आत्मविश्वास को भिन्न रूप से क्यों प्रभावित करता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में अभिभावकीय शैली और आत्मसम्मान का संबंध स्थापित किया गया है, किंतु भावनात्मक सुरक्षा, निर्णय की स्वतंत्रता और डिजिटल पारिवारिक निगरानी के संयुक्त प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सीमित है। इस शोध में आत्मविश्वास को केवल सामान्य आत्मसम्मान न मानकर आत्मस्वीकृति, सामाजिक अभिव्यक्ति, निर्णय विश्वास, शैक्षिक क्षमता-बोध और असफलता से पुनः उभरने की क्षमता के बहुआयामी स्वरूप में देखा गया है। प्रस्तावित विश्लेषण यह मानता है कि स्नेह और स्पष्ट सीमाओं का संतुलन बच्चे में सुरक्षा तथा स्वतंत्रता दोनों विकसित कर सकता है, जबकि अत्यधिक मनोवैज्ञानिक नियंत्रण आत्मसंदेह को बढ़ा सकता है। वर्ष २०२१ से २०२६ के अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्ष भी अभिभावकीय भावनात्मक समर्थन, आत्मसम्मान तथा मानसिक कल्याण के बीच महत्वपूर्ण संबंध की ओर संकेत करते हैं। प्रमुख शब्द— अभिभावकीय शैली, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, भावनात्मक सुरक्षा, स्वायत्तता, बाल मनोविज्ञान

परिचय

बाल विकास केवल जैविक परिपक्वता का परिणाम नहीं है, बल्कि परिवार, विद्यालय, सहपाठी समूह और व्यापक सामाजिक परिवेश के साथ होने वाली सतत अंतःक्रियाओं से निर्मित होने वाली बहुस्तरीय प्रक्रिया है। इन सभी प्रभावों में परिवार बच्चे के लिए सबसे प्रारंभिक और दीर्घकालिक सामाजिक व्यवस्था का कार्य करता है। माता-पिता द्वारा अपनाया गया व्यवहार बच्चे को यह संदेश देता है कि उसकी क्षमताओं, विचारों, भावनाओं और निर्णयों का कितना मूल्य है। यही संदेश धीरे-धीरे आत्ममूल्यांकन की उस मानसिक संरचना का निर्माण करता है जिसके आधार पर बच्चा यह निर्धारित करता है कि वह कितना सक्षम, स्वीकार्य, प्रभावी और निर्णय लेने योग्य है।

आत्मविश्वास को सामान्यतः स्वयं की क्षमताओं पर विश्वास के रूप में समझा जाता है, किंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसकी संरचना अधिक जटिल है। किसी बच्चे में शैक्षिक आत्मविश्वास उच्च हो सकता है, परंतु सामाजिक परिस्थितियों में वह संकोच अनुभव कर सकता है। इसी प्रकार कोई बच्चा अपनी विचार अभिव्यक्ति में सक्षम हो सकता है, किंतु असफलता के बाद स्वयं को अत्यधिक दोषी मान सकता है। इसलिए वर्तमान अध्ययन आत्मविश्वास को बहुआयामी मनोवैज्ञानिक निर्माण के रूप में स्वीकार करता है, जिसमें आत्मस्वीकृति, कार्य आरंभ करने की तत्परता, निर्णय क्षमता, सामाजिक अभिव्यक्ति, चुनौती स्वीकार करने की प्रवृत्ति और असफलता के पश्चात पुनः प्रयास करने की मानसिक शक्ति सम्मिलित है।

अभिभावकीय व्यवहार को पारंपरिक रूप से स्नेह, अनुशासन, नियंत्रण और उत्तरदायित्व जैसे आयामों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता रहा है। किंतु आधुनिक पारिवारिक जीवन में अभिभावकीय भूमिका इन पारंपरिक आयामों तक सीमित नहीं रह गई है। बच्चों की दिनचर्या, शिक्षा, मित्रता, मनोरंजन और सामाजिक संपर्क का एक बड़ा भाग अब डिजिटल माध्यमों से जुड़ा है। परिणामस्वरूप अभिभावकीय नियंत्रण का स्वरूप भी बदल रहा है। उपकरणों के उपयोग की समय-सीमा निर्धारित करना, डिजिटल गतिविधियों की निगरानी, संवाद-संपर्क पर प्रतिबंध और शैक्षिक प्रदर्शन की निरंतर जाँच जैसे व्यवहार आधुनिक अनुशासन का हिस्सा बन चुके हैं। इन व्यवहारों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव केवल उनकी कठोरता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि बच्चे उन्हें सुरक्षा के रूप में अनुभव करते हैं या अविश्वास और हस्तक्षेप के रूप में।

हाल के अध्ययनों में अभिभावकीय भावनात्मक स्नेह को किशोरों के उच्च आत्मसम्मान और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य से संबद्ध पाया गया है। इसके विपरीत अस्वीकृति, अति-संरक्षण और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण निम्न आत्मसम्मान तथा मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों से संबद्ध पाए गए हैं। वर्ष २०२१ में प्रकाशित एक अध्ययन में भावनात्मक स्नेह का आत्मसम्मान के माध्यम से किशोर मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया, जबकि अस्वीकृति और अति-संरक्षण प्रतिकूल दिशा में जुड़े पाए गए।



Fig. 1: पालन-पोषण की दिशा और बाल आत्मविश्वास का विकास

इसके अतिरिक्त हाल के व्यापक सांख्यिकीय समेकन में अनेक स्वतंत्र अध्ययनों को सम्मिलित करके यह पाया गया कि अभिभावकीय समर्थन तथा संतुलित नियंत्रण आत्मसम्मान से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का संबंध नकारात्मक है। यह निष्कर्ष

महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि सभी प्रकार का नियंत्रण समान प्रभाव नहीं उत्पन्न करता। नियमों और सीमाओं का स्पष्ट निर्धारण यदि सम्मानपूर्ण संवाद और भावनात्मक समर्थन के साथ किया जाए तो उसका प्रभाव उस नियंत्रण से भिन्न हो सकता है जिसमें अपराधबोध, भावनात्मक दबाव, तुलना अथवा प्रेम वापस लेने जैसी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हों।

भारतीय पारिवारिक संदर्भ में यह अंतर और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय परिवारों में शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक प्रतिष्ठा, अनुशासन और सामूहिक उत्तरदायित्व को प्रायः उच्च महत्व दिया जाता है। इसलिए कुछ अभिभावकीय नियंत्रण बच्चों द्वारा संरक्षण या मार्गदर्शन के रूप में भी ग्रहण किए जा सकते हैं। वर्ष २०२६ में भारतीय किशोरों और उनके अभिभावकों पर किए गए मिश्रित पद्धति आधारित अध्ययन में व्यवहार संबंधी नियंत्रण को अनेक किशोरों द्वारा समर्थनकारी माना गया, जबकि मनोवैज्ञानिक नियंत्रण को अभिभावक-किशोर संबंधों में असंतोष से संबद्ध पाया गया। अध्ययन ने यह भी संकेत किया कि अत्यधिक नियंत्रण किशोरों की स्वायत्तता तथा क्षमता-विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

यहीं से प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय शोध-अंतर निर्मित होता है। अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन अभिभावकीय शैली और आत्मसम्मान के मध्य सीधा संबंध देखते हैं, जबकि बहुत कम शोध यह विश्लेषित करते हैं कि अभिभावकीय स्नेह, व्यवहारगत अनुशासन, मनोवैज्ञानिक नियंत्रण, निर्णय स्वतंत्रता और डिजिटल निगरानी परस्पर मिलकर बच्चे के आत्मविश्वास के विभिन्न आयामों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से भारतीय सामाजिक संदर्भ में ऐसा समेकित मनोवैज्ञानिक प्रतिरूप अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुआ है।

अध्ययन का प्रमुख तर्क यह है कि बच्चे का आत्मविश्वास केवल इस बात से निर्धारित नहीं होता कि माता-पिता कठोर हैं या उदार, बल्कि इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि अनुशासन किस भावनात्मक संदर्भ में लागू किया जाता है। यदि नियमों के पीछे कारण स्पष्ट किए जाएँ, असहमति व्यक्त करने की अनुमति हो, असफलता को सीखने की प्रक्रिया माना जाए और बच्चे को आयु के अनुरूप निर्णय लेने का अवसर दिया जाए, तो अनुशासन आत्मविश्वास-विरोधी होने के बजाय आत्मनियमन को विकसित कर सकता है। इसके विपरीत अत्यधिक तुलना, अपमान, निरंतर आलोचना, अपराधबोध उत्पन्न करना और प्रत्येक निर्णय पर नियंत्रण बच्चे में बाहरी स्वीकृति पर निर्भरता बढ़ा सकता है।

इस शोध का उद्देश्य इसलिए केवल अभिभावकीय शैली और आत्मविश्वास के बीच सहसंबंध ज्ञात करना नहीं है। इसका व्यापक उद्देश्य यह समझना है कि कौन-से अभिभावकीय व्यवहार आत्मविश्वास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं, कौन-से प्रभाव भावनात्मक सुरक्षा और स्वायत्तता के माध्यम से संचालित होते हैं, तथा किन परिस्थितियों में सामान्यतः सकारात्मक माने जाने वाले अनुशासनात्मक व्यवहार भी प्रतिकूल परिणाम उत्पन्न कर सकते हैं।

साहित्य समीक्षा

२.१ अभिभावकीय शैली की मनोवैज्ञानिक अवधारणा

अभिभावकीय शैली उन अपेक्षाकृत स्थायी व्यवहारों, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और अनुशासनात्मक रणनीतियों का समुच्चय है जिनके माध्यम से माता-पिता अपने बच्चों के विकास और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इस अवधारणा के दो मूल आधार स्नेह और नियंत्रण माने जाते हैं। स्नेह में स्वीकृति, भावनात्मक उपलब्धता, प्रशंसा, समर्थन और संवाद सम्मिलित होते हैं, जबकि नियंत्रण में नियम, निगरानी, सीमाएँ और व्यवहार संबंधी अपेक्षाएँ आती हैं।

इन दोनों आयामों का अनुपात अभिभावकीय वातावरण को अलग-अलग मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान करता है। उच्च स्नेह और तर्कसंगत अनुशासन वाला वातावरण सामान्यतः बच्चे की स्वतंत्रता को पूर्णतः अनियंत्रित नहीं छोड़ता, बल्कि उसे निर्धारित सीमाओं के भीतर निर्णय लेने का अवसर देता है। इसके विपरीत उच्च नियंत्रण और निम्न भावनात्मक समर्थन वाला वातावरण आज्ञाकारिता को प्राथमिकता दे सकता है। अत्यधिक शिथिलता में भावनात्मक स्नेह तो उपलब्ध हो सकता है, किंतु व्यवहारगत सीमाएँ अस्पष्ट रहती हैं; वहीं उपेक्षापूर्ण वातावरण में भावनात्मक सहभागिता और संरचनात्मक मार्गदर्शन दोनों कमजोर हो सकते हैं।

२.२ आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और क्षमता-बोध

आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान परस्पर निकट अवधारणाएँ हैं, किंतु पूर्णतः समान नहीं हैं। आत्मसम्मान व्यक्ति द्वारा स्वयं के समग्र मूल्य के आकलन को दर्शाता है, जबकि आत्मविश्वास विशिष्ट परिस्थितियों में अपनी क्षमता और प्रभावशीलता पर विश्वास से संबंधित है। बालक के विकास में दोनों एक-दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं। जब बच्चे की राय सुनी जाती है, प्रयास की सराहना की जाती है और त्रुटि के बाद सुधार का अवसर दिया जाता है, तो वह केवल स्वयं को मूल्यवान नहीं समझता, बल्कि यह भी अनुभव करता है कि वह परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम है।

सन् २०२४ में प्रकाशित एक व्यापक विश्लेषण तथा बाद में प्रकाशित समेकित निष्कर्षों ने अभिभावकीय व्यवहार, आत्मसम्मान और बच्चों तथा किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के मध्य सार्थक संबंध की पुष्टि की है। अनेक अध्ययनों के संयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अभिभावकीय शैली का प्रभाव केवल तात्कालिक व्यवहार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आत्ममूल्यांकन और मानसिक स्वास्थ्य की व्यापक प्रक्रियाओं से जुड़ सकता है।

२.३ भावनात्मक स्नेह और आत्मविश्वास

भावनात्मक स्नेह बच्चों को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का अनुभव कराता है। जब माता-पिता बच्चे की भावनाओं को स्वीकार करते हैं, उसकी उपलब्धियों से अधिक उसके प्रयास को महत्व देते हैं तथा कठिनाइयों के समय समर्थन प्रदान करते हैं, तब बच्चा असफलता को अपने व्यक्तित्व की स्थायी कमी के रूप में देखने की संभावना कम रखता है।

दीर्घकालिक अनुसंधान में भी अभिभावकीय स्नेह और बाद के आत्मसम्मान के मध्य संबंध पाया गया है। वर्ष २०२१ में प्रकाशित एक अध्ययन ने संकेत किया कि किशोरावस्था में अनुभव किया गया अभिभावकीय स्नेह बाद की आत्मसम्मान संबंधी स्थितियों से जुड़ा रहता है और प्रारंभिक आत्मसम्मान इस दीर्घकालिक संबंध में मध्यस्थ भूमिका निभा सकता है।

इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि स्नेहपूर्ण अभिभावकीय व्यवहार बच्चे में एक ऐसी आंतरिक मानसिक संरचना विकसित करता है जिसमें बाह्य प्रशंसा उपयोगी तो होती है, किंतु आत्ममूल्य का एकमात्र स्रोत नहीं बनती। यही स्थिति स्थायी आत्मविश्वास के लिए आवश्यक मानी जा सकती है।

२.४ अनुशासन और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का अंतर

अभिभावकीय नियंत्रण की अवधारणा का सावधानीपूर्वक विभेदन आवश्यक है। व्यवहारगत नियंत्रण में समय-सीमा, उत्तरदायित्व, अध्ययन से संबंधित अपेक्षाएँ और सुरक्षा नियम जैसी स्पष्ट सीमाएँ सम्मिलित हो सकती हैं। मनोवैज्ञानिक नियंत्रण में बच्चे के विचारों और भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयास, भावनात्मक दबाव, अपराधबोध उत्पन्न करना, स्नेह वापस लेना अथवा व्यक्तिगत निर्णयों में अत्यधिक हस्तक्षेप सम्मिलित हो सकता है।

हालिया समेकित शोध में मनोवैज्ञानिक नियंत्रण को आत्मसम्मान के साथ स्पष्ट नकारात्मक संबंध में पाया गया है, जबकि तर्कसंगत और संरचित नियंत्रण का संबंध सकारात्मक दिशा में पाया जा सकता है। इससे संकेत मिलता है कि आत्मविश्वास के विकास के संदर्भ में “नियंत्रण की मात्रा” की तुलना में “नियंत्रण की प्रकृति” अधिक निर्णायक हो सकती है।

भारतीय संदर्भ में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि माता-पिता द्वारा निर्धारित शैक्षिक लक्ष्य, सामाजिक नियम और पारिवारिक अपेक्षाएँ अनेक बार बच्चे द्वारा संरक्षण के रूप में स्वीकार की जाती हैं। किंतु वही नियंत्रण जब व्यक्तिगत क्षमता पर अविश्वास, अत्यधिक दबाव या निर्णय स्वायत्तता के निषेध में परिवर्तित होता है, तब आत्मविश्वास की वृद्धि बाधित हो सकती है।

२.५ स्वायत्तता और निर्णय क्षमता

बच्चे को पूर्ण स्वतंत्रता देना और आयु-उपयुक्त स्वायत्तता प्रदान करना समान अवधारणाएँ नहीं हैं। विकासात्मक दृष्टि से स्वायत्तता का अर्थ ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करना है जिनमें बच्चा विकल्पों को समझे, सीमाओं के भीतर निर्णय करे और निर्णयों के परिणामों से सीख सके। जब अभिभावक प्रत्येक निर्णय स्वयं लेते हैं, तो बच्चा व्यवहारगत रूप से अनुशासित दिखाई दे सकता है, किंतु उसकी स्वतंत्र समस्या-समाधान क्षमता अपेक्षाकृत कमजोर रह सकती है।

इसके विपरीत, संवाद-आधारित अभिभावकीय व्यवहार बच्चे को यह संकेत देता है कि उसकी सोच महत्वपूर्ण है। यह अनुभव सामाजिक

अभिव्यक्ति, शैक्षिक चुनौती स्वीकार करने और कठिन परिस्थितियों में अपनी क्षमता पर विश्वास बढ़ाने में सहायक हो सकता है। अतः स्वायत्तता को वर्तमान अध्ययन में अभिभावकीय शैली और आत्मविश्वास के बीच एक संभावित मध्यस्थ मनोवैज्ञानिक कारक माना गया है।

२.६ डिजिटल पारिवारिक वातावरण का उभरता प्रभाव

हाल के वर्षों में बालक और अभिभावक के संबंधों में डिजिटल गतिविधियों की भूमिका तेजी से बढ़ी है। अभिभावक बच्चों के उपकरण उपयोग, अध्ययन समय, सामाजिक संपर्क और मनोरंजन सामग्री को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से यह निगरानी आवश्यक हो सकती है, किंतु इसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या बच्चे की आयु, माता-पिता के संवाद और नियंत्रण की पद्धति पर निर्भर करती है।

यदि डिजिटल नियम पारिवारिक चर्चा और स्पष्ट कारणों पर आधारित हों, तो बच्चा उन्हें संरचनात्मक सुरक्षा के रूप में समझ सकता है। इसके विपरीत गुप्त निगरानी, निरंतर संदेह या बिना संवाद के प्रतिबंध बच्चे में यह धारणा उत्पन्न कर सकते हैं कि माता-पिता उसकी निर्णय क्षमता पर विश्वास नहीं करते। इस प्रकार आधुनिक अभिभावकीय शैली का अध्ययन डिजिटल निगरानी और विश्वास के आयाम को सम्मिलित किए बिना अपूर्ण रह सकता है।

प्रस्तावित शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मिश्रित मात्रात्मक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण-पद्धति प्रस्तावित की गई है। इसका उद्देश्य केवल अभिभावकीय शैली और आत्मविश्वास के बीच सामान्य संबंध ज्ञात करना नहीं है, बल्कि यह निर्धारित करना है कि भावनात्मक स्नेह, संरचित अनुशासन, मनोवैज्ञानिक नियंत्रण, स्वायत्तता-समर्थन और डिजिटल निगरानी के कौन-से संयोजन बच्चों के आत्मविश्वास पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं।

इस अध्ययन की विशेषता यह है कि अभिभावकीय व्यवहार को एकल वर्ग में न रखकर बहुआयामी मनोवैज्ञानिक चर के रूप में मापा जाएगा। आत्मविश्वास को भी एक व्यापक संकल्पना मानने के बजाय पाँच उपआयामों—आत्मस्वीकृति, निर्णय क्षमता, सामाजिक अभिव्यक्ति, शैक्षिक आत्मविश्वास और कठिनाई के बाद पुनः प्रयास की प्रवृत्ति—में विभाजित किया जाएगा।

अध्ययन का केंद्रीय अनुमान यह है कि भावनात्मक स्नेह और स्वायत्तता-समर्थन आत्मविश्वास को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ाते हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक नियंत्रण आत्मसंदेह को बढ़ाकर आत्मविश्वास को कम करता है। साथ ही यह भी परखा जाएगा कि संरचित अनुशासन का प्रभाव परिस्थितिनिष्ठ है; अर्थात् यदि अनुशासन भावनात्मक समर्थन और तर्कपूर्ण संवाद के साथ दिया जाए तो उसका प्रभाव सकारात्मक हो सकता है, जबकि अत्यधिक नियंत्रण के साथ वही अनुशासन प्रतिकूल परिणाम उत्पन्न कर सकता है।

३.१ अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तावित अध्ययन को वर्णनात्मक, सहसंबंधात्मक और पूर्वानुमानात्मक रूप में तैयार किया गया है। अध्ययन में एक समय-बिंदु पर बच्चों और उनके अभिभावकों से जानकारी संकलित की जाएगी। जहाँ संभव हो, बच्चे और अभिभावक दोनों से स्वतंत्र उत्तर लिए जाएंगे ताकि केवल एक स्रोत पर निर्भरता से उत्पन्न पक्षपात कम किया जा सके।

अध्ययन की प्रमुख स्वतंत्र चर निम्न होंगी—भावनात्मक स्नेह, संरचित अनुशासन, मनोवैज्ञानिक नियंत्रण, स्वायत्तता-समर्थन और डिजिटल निगरानी। आश्रित चर बहुआयामी आत्मविश्वास होगा। बच्चे की आयु, लिंग, परिवार का आकार, अभिभावकों की शिक्षा, पारिवारिक आर्थिक स्थिति और दैनिक डिजिटल उपयोग अवधि को नियंत्रण चर के रूप में लिया जाएगा।

३.२ प्रतिभागियों का चयन

अध्ययन के लिए ११ से १६ वर्ष आयु वर्ग के लगभग ३६० बच्चों और उनके प्रमुख अभिभावकों का चयन प्रस्तावित है। यह आयु सीमा इसलिए चुनी गई है क्योंकि इस अवस्था में आत्म-पहचान, सामाजिक तुलना, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा और निर्णय स्वतंत्रता तीव्रता से विकसित होती है।

प्रतिभागियों का चयन स्तरीकृत नमूना-पद्धति से किया जाएगा। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यालयों और आवासीय क्षेत्रों को सम्मिलित करके प्रतिनिधित्व बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। जिन बच्चों के प्रपत्र अपूर्ण होंगे या जिनमें प्रतिक्रिया-विरोधाभास अत्यधिक होगा, उन्हें अंतिम विश्लेषण से बाहर रखा जाएगा।

प्रयोगात्मक व्यवस्था

४.१ आँकड़ा-संग्रह

आँकड़ा-संग्रह के लिए दो पृथक प्रश्नावली समूह तैयार किए जाएंगे। पहला समूह बच्चों के लिए होगा और दूसरा अभिभावकों के लिए। बच्चों की प्रश्नावली में आत्मविश्वास के विभिन्न आयामों, पारिवारिक संवाद, निर्णय स्वतंत्रता और अनुभूत अभिभावकीय नियंत्रण से संबंधित कथन सम्मिलित होंगे।

अभिभावकीय प्रश्नावली में अनुशासन की विधि, भावनात्मक सहभागिता, बच्चों की गतिविधियों की निगरानी, गलती के प्रति प्रतिक्रिया, डिजिटल उपकरणों पर नियंत्रण तथा निर्णय लेने में बच्चे को दी जाने वाली स्वतंत्रता मापी जाएगी।

प्रत्येक कथन को पाँच-स्तरीय सहमति-मापनी पर अंकित किया जाएगा। उच्च अंक संबंधित व्यवहार या मनोवैज्ञानिक गुण की अधिक उपस्थिति को प्रदर्शित करेंगे।

४.२ आँकड़ा-पूर्व प्रसंस्करण

विश्लेषण से पहले आँकड़ों की गुणवत्ता जाँची जाएगी। अत्यधिक अपूर्ण उत्तरों वाले प्रपत्र हटाए जाएंगे। बहुत कम मात्रा में अनुपस्थित मान होने पर आयु-वर्ग और संबंधित मापनी के मध्य मान का उपयोग किया जाएगा।

विपरीत अर्थ वाले कथनों के अंक उलटकर एकसमान दिशा में परिवर्तित किए जाएंगे। इसके बाद सभी उपमापनियों के मानकों को सामान्यीकृत किया जाएगा, ताकि विभिन्न मापों की तुलना समान आधार पर की जा सके।

अत्यधिक असंगत उत्तरों का पता लगाने के लिए प्रतिक्रिया-समय, समान विकल्पों की लगातार पुनरावृत्ति तथा विरोधी कथनों के उत्तरों में असामान्य समानता की जाँच की जाएगी।



Fig. 2: पालन-पोषण की दिशा और बाल आत्मविश्वास: अभिभावकीय व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

४.३ मनोवैज्ञानिक माप संरचना

अभिभावकीय शैली के पाँच प्रमुख सूचक बनाए जाएंगे—

भावनात्मक स्नेह सूचक,
संरचित अनुशासन सूचक,
मनोवैज्ञानिक नियंत्रण सूचक,
स्वायत्तता-समर्थन सूचक,
डिजिटल निगरानी सूचक।

बच्चों के आत्मविश्वास के लिए पाँच उपसूचक विकसित किए जाएंगे—

आत्मस्वीकृति,
निर्णय विश्वास,
सामाजिक अभिव्यक्ति,

शैक्षिक आत्मविश्वास,
कठिनाई-पश्चात पुनः प्रयास।

इन उपसूचकों के संयुक्त मान से समग्र आत्मविश्वास सूचक निर्मित किया जाएगा।

४.४ विश्लेषणात्मक प्रतिरूप संरचना

अध्ययन में व्याख्यात्मक तथा पूर्वानुमानात्मक दोनों प्रकार के सांख्यिकीय प्रतिरूप प्रयुक्त किए जाएंगे। प्रथम चरण में सहसंबंध विश्लेषण द्वारा यह देखा जाएगा कि प्रत्येक अभिभावकीय आयाम का आत्मविश्वास के साथ संबंध किस दिशा और तीव्रता का है।

द्वितीय चरण में बहुचर प्रतिगमन प्रतिरूप का प्रयोग करके यह निर्धारित किया जाएगा कि अन्य सामाजिक और पारिवारिक कारकों को नियंत्रित करने के बाद कौन-से अभिभावकीय व्यवहार आत्मविश्वास में स्वतंत्र योगदान देते हैं।

तृतीय चरण में निर्णय-वृक्ष आधारित समूहित पूर्वानुमान प्रतिरूप का प्रयोग किया जाएगा। इसका उद्देश्य उन जटिल अंतःक्रियाओं का पता लगाना होगा जिन्हें केवल रैखिक प्रतिरूप स्पष्ट नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, डिजिटल निगरानी का प्रभाव संभवतः तभी प्रतिकूल हो जब मनोवैज्ञानिक नियंत्रण अधिक तथा भावनात्मक स्नेह कम हो।

इसके अतिरिक्त मध्यस्थता विश्लेषण द्वारा यह जाँचा जाएगा कि क्या स्वायत्तता-बोध अभिभावकीय शैली और आत्मविश्वास के बीच मध्यस्थ भूमिका निभाता है।

४.५ प्रशिक्षण रणनीति

पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण के लिए संपूर्ण आँकड़ा-संग्रह को पाँच समतुल्य भागों में विभाजित करके क्रमिक सत्यापन किया जाएगा। प्रत्येक चरण में चार भागों का उपयोग प्रतिरूप निर्माण हेतु और शेष एक भाग का उपयोग जाँच के लिए किया जाएगा।

यह प्रक्रिया पाँच बार दोहराई जाएगी ताकि प्रत्येक भाग कम-से-कम एक बार स्वतंत्र परीक्षण के रूप में उपयोग हो सके। इससे प्रतिरूप की स्थिरता का अधिक विश्वसनीय अनुमान प्राप्त किया जा सकेगा।

अतिरिक्त जटिलता से बचने के लिए प्रतिरूप की गहराई, न्यूनतम समूह आकार और चर-चयन सीमित रखे जाएंगे। अंतिम निष्कर्ष केवल उन संबंधों पर आधारित होंगे जो विभिन्न परीक्षण विभाजनों में अपेक्षाकृत स्थिर बने रहें।

४.६ मूल्यांकन मानक

अध्ययन में निम्न प्रमुख मानकों का उपयोग प्रस्तावित है—

व्याख्यायित विचरण अनुपात,
माध्य निरपेक्ष त्रुटि,
मूल-माध्य-वर्ग त्रुटि,

क्रम-सहसंबंध,
स्थिरता सूचक,
चर-महत्त्व मान।

इन मानकों के माध्यम से केवल यह नहीं देखा जाएगा कि प्रतिरूप आत्मविश्वास के स्तर का अनुमान कितना सही लगाता है, बल्कि यह भी निर्धारित किया जाएगा कि कौन-से पारिवारिक कारक अनुमान में सर्वाधिक योगदान दे रहे हैं।

परिणाम और चर्चा

यहाँ प्रस्तुत परिणाम अध्ययन-रूपरेखा की विश्लेषणात्मक अपेक्षाओं को दर्शाने के लिए उदाहरणात्मक हैं; इन्हें वास्तविक क्षेत्रीय निष्कर्ष नहीं माना जाना चाहिए। वास्तविक शोध में अंतिम मान प्रतिभागियों से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के बाद निर्धारित किए जाएंगे।

प्रस्तावित विश्लेषण से अपेक्षा है कि भावनात्मक स्नेह और स्वायत्तता-समर्थन आत्मविश्वास के सबसे मजबूत सकारात्मक पूर्वानुमानक के रूप में उभरेंगे। विशेष रूप से जिन बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने, छोटे निर्णय लेने और गलती के बाद सुधार का अवसर मिलता है, उनमें निर्णय विश्वास तथा सामाजिक अभिव्यक्ति अधिक होने की संभावना है।

इसके विपरीत मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का संबंध आत्मविश्वास से नकारात्मक होने की अपेक्षा है। यदि बच्चे को बार-बार अपराधबोध, तुलना, अपमान या भावनात्मक दबाव के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है, तो वह बाहरी स्वीकृति पर अधिक निर्भर हो सकता है। ऐसी स्थिति में निर्णय लेने से पहले बार-बार आश्वासन की आवश्यकता बढ़ सकती है।

संरचित अनुशासन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से न तो पूर्णतः सकारात्मक और न ही पूर्णतः नकारात्मक होने की संभावना है। यदि स्पष्ट नियम स्नेहपूर्ण वातावरण में लागू किए जाएँ तो वे सुरक्षा, जिम्मेदारी और आत्मनियमन को बढ़ा सकते हैं। किंतु वही नियम यदि कठोरता, भय या अपमान से जुड़े हों तो वे आत्मविश्वास को कमजोर कर सकते हैं।

डिजिटल निगरानी के संदर्भ में भी समान द्विस्तरीय प्रभाव अपेक्षित है। पारदर्शी नियम, समय-सीमा और सुरक्षा संबंधी चर्चा स्वयं में हानिकारक नहीं मानी जा सकती। समस्या तब उत्पन्न हो सकती है जब डिजिटल निगरानी अविश्वास, गोपनीयता के अत्यधिक उल्लंघन और निरंतर संदेह के साथ जुड़ जाए।

५.१ प्रस्तावित परिणाम-सारणी

मूल्यांकन आयाम	अपेक्षित प्रभाव की दिशा	तुलनात्मक प्रभाव स्तर	प्रमुख मनोवैज्ञानिक अवलोकन
भावनात्मक स्नेह	सकारात्मक	अत्यधिक	आत्मस्वीकृति और सामाजिक सहजता में वृद्धि

स्वायत्तता-समर्थन	सकारात्मक	अत्यधिक	निर्णय विश्वास और स्वतंत्र समस्या-समाधान में वृद्धि
संरचित अनुशासन	परिस्थितिनिष्ठ सकारात्मक	मध्यम	स्नेहपूर्ण संवाद होने पर आत्मनियमन में सहायता
मनोवैज्ञानिक नियंत्रण	नकारात्मक	अत्यधिक	आत्मसंदेह, बाहरी स्वीकृति पर निर्भरता और असफलता-भय में वृद्धि
डिजिटल निगरानी	मिश्रित	मध्यम	पारदर्शी नियम लाभकारी, अविश्वासपूर्ण निगरानी प्रतिकूल
पारिवारिक संवाद की गुणवत्ता	सकारात्मक	उच्च	अभिव्यक्ति क्षमता और भावनात्मक सुरक्षा में सुधार
निरंतर तुलना और आलोचना	नकारात्मक	उच्च	आत्ममूल्य में कमी और सामाजिक संकोच में वृद्धि

अभिभावकीय व्यवहार के विभिन्न आयामों का किशोरों के मनोवैज्ञानिक विकास पर तुलनात्मक प्रभाव



सारणी यह संकेत करती है कि आत्मविश्वास निर्माण की प्रक्रिया केवल अभिभावकीय कठोरता अथवा उदारता से नहीं समझी जा सकती।

निर्णायक पक्ष यह है कि बच्चा अभिभावकीय व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अर्थ किस रूप में ग्रहण करता है।

यदि अनुशासन को वह संरक्षण और मार्गदर्शन के रूप में देखता है, तो उसका प्रभाव सकारात्मक हो सकता है। यदि वही व्यवहार नियंत्रण, अविश्वास या अपमान के रूप में अनुभव होता है, तो परिणाम उलटा हो सकता है।

५.२ भावनात्मक सुरक्षा की मध्यस्थ भूमिका

प्रस्तावित विश्लेषण में भावनात्मक सुरक्षा को एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक सेतु के रूप में देखा गया है। स्नेहपूर्ण परिवार में बच्चा यह अनुभव करता है कि गलती करने पर भी उसकी स्वीकार्यता समाप्त नहीं होगी। यह अनुभव जोखिम लेने, प्रश्न पूछने और नए कार्य करने की तत्परता बढ़ा सकता है।

इसके विपरीत यदि प्रेम और स्वीकृति उपलब्धि या आज्ञाकारिता पर निर्भर प्रतीत हो, तो बच्चा असफलता को केवल कार्य-संबंधी घटना न मानकर संबंध-विच्छेद या निराशा से जोड़ सकता है। यह प्रक्रिया आत्मविश्वास को कमजोर करती है।

५.३ स्वायत्तता का प्रभाव

स्वायत्तता-समर्थन का प्रभाव विशेष रूप से किशोरावस्था के निकट अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। इस अवस्था में बच्चा स्वयं को अलग व्यक्तित्व के रूप में देखने लगता है। यदि उसे निर्णय लेने का सीमित लेकिन वास्तविक अवसर मिलता है, तो उसमें आंतरिक उत्तरदायित्व विकसित हो सकता है।

यदि सभी निर्णय अभिभावक लेते रहें, तो अल्पकाल में अनुशासन बना रह सकता है, लेकिन स्वतंत्र निर्णय क्षमता पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकती। फलतः नई सामाजिक अथवा शैक्षिक परिस्थितियों में आत्मविश्वास कमजोर दिखाई दे सकता है।

५.४ सामाजिक तुलना और आत्मविश्वास

लगातार दूसरे बच्चों से तुलना करना आत्मविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। तुलना से प्रेरणा उत्पन्न हो सकती है, किंतु यदि तुलना का स्वरूप अपमानजनक हो तो बच्चा अपनी उपलब्धियों का स्वतंत्र मूल्यांकन करने के बजाय दूसरे की सफलता को अपनी कमी के प्रमाण के रूप में देखने लगता है।

इस अध्ययन में तुलना-आधारित आलोचना को मनोवैज्ञानिक नियंत्रण की उपश्रेणी के रूप में देखा गया है। अपेक्षा है कि इसका प्रभाव विशेष रूप से शैक्षिक आत्मविश्वास और आत्मस्वीकृति पर अधिक स्पष्ट होगा।

सीमाएँ

प्रस्तावित अध्ययन की प्रथम सीमा यह है कि एक समय-बिंदु पर संकलित आँकड़े कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं कर सकते। यदि उच्च

आत्मविश्वास वाले बच्चे अपने अभिभावकों को अधिक सहयोगी मानते हैं, तो संबंध की दिशा आंशिक रूप से उलटी भी हो सकती है।

दूसरी सीमा आत्म-रिपोर्ट आधारित मापन से संबंधित है। बच्चे और अभिभावक दोनों सामाजिक रूप से स्वीकार्य उत्तर देने का प्रयास कर सकते हैं।

तीसरी सीमा सांस्कृतिक विविधता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनुशासन, स्वायत्तता और अभिभावकीय उत्तरदायित्व के अर्थ भिन्न हो सकते हैं।

चौथी सीमा यह है कि आत्मविश्वास को मापते समय विद्यालयीय उपलब्धि, सहपाठी संबंध और शिक्षक व्यवहार जैसे बाहरी प्रभावों को पूर्णतः नियंत्रित करना संभव नहीं होगा।

पाँचवीं सीमा डिजिटल निगरानी के मापन से जुड़ी है। अलग-अलग परिवारों में निगरानी का वास्तविक अर्थ और तीव्रता भिन्न हो सकती है, इसलिए केवल समय-सीमा या उपकरण नियंत्रण से संपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रभाव नहीं समझा जा सकता।

भावी संभावनाएँ

भविष्य के अध्ययनों में दीर्घकालिक शोध-रूपरेखा अपनाई जा सकती है, जिसमें बच्चों को कई वर्षों तक अनुगमन करके यह देखा जाए कि अभिभावकीय शैली में परिवर्तन आत्मविश्वास को किस प्रकार प्रभावित करता है।

माता, पिता और अन्य प्रमुख देखभालकर्ताओं के प्रभाव का पृथक विश्लेषण भी उपयोगी होगा। कई परिवारों में अलग-अलग अभिभावक भिन्न अनुशासनात्मक और भावनात्मक शैली अपनाते हैं, जिनका संयुक्त प्रभाव विशेष प्रकार का पारिवारिक वातावरण बना सकता है।

भविष्य के अनुसंधान में विद्यालयीय वातावरण, सहपाठी स्वीकृति और शिक्षक समर्थन को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि कमजोर पारिवारिक समर्थन की स्थिति में क्या विद्यालयीय प्रोत्साहन आत्मविश्वास की रक्षा कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण का उपयोग बड़े मनोवैज्ञानिक आँकड़ों में जटिल व्यवहारिक संयोजनों की पहचान के लिए किया जा सकता है। उदाहरणतः यह निर्धारित किया जा सकता है कि किस आयु में कौन-सा अभिभावकीय व्यवहार अधिक प्रभावी है तथा किन बच्चों में अत्यधिक नियंत्रण के प्रतिकूल प्रभाव की संभावना अधिक होती है।

भविष्य में परिवार परामर्श हेतु व्यक्तिगत अनुशांसा प्रणाली भी विकसित की जा सकती है, लेकिन ऐसी किसी प्रणाली में मानवीय मनोवैज्ञानिक निर्णय, गोपनीयता, पारदर्शिता और पक्षपात-नियंत्रण को अनिवार्य स्थान दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन अभिभावकीय शैली और बच्चों के आत्मविश्वास के संबंध को पारंपरिक कठोर-अथवा-उदार वर्गीकरण से आगे ले जाकर बहुआयामी मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है। इसका केंद्रीय निष्कर्षात्मक तर्क यह है कि आत्मविश्वास के निर्माण में केवल अभिभावकीय नियंत्रण की मात्रा नहीं, बल्कि नियंत्रण का भावनात्मक स्वरूप, संवाद की गुणवत्ता और बच्चे को दी जाने वाली स्वायत्तता अधिक महत्वपूर्ण हैं।

भावनात्मक स्नेह बच्चे को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करता है, जबकि स्वायत्तता-समर्थन उसे अपनी क्षमता का प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर देता है। इन दोनों का संयोजन स्थायी आत्मविश्वास के विकास के लिए अनुकूल आधार निर्मित कर सकता है।

इसके विपरीत मनोवैज्ञानिक नियंत्रण, निरंतर तुलना, अपमान और बाहरी स्वीकृति पर अत्यधिक निर्भरता बच्चे के आत्ममूल्य को कमजोर कर सकती है। ऐसी परिस्थितियों में बच्चा व्यवहारगत रूप से आज्ञाकारी दिखाई दे सकता है, परंतु उसके भीतर निर्णय-संदेह और असफलता-भय बढ़ सकता है।

संरचित अनुशासन को इसलिए नकारात्मक नहीं माना जाना चाहिए। स्पष्ट सीमाएँ तब सहायक होती हैं जब वे तर्क, सम्मान और भावनात्मक समर्थन के साथ लागू हों। यही भेद इस अध्ययन के प्रमुख मनोवैज्ञानिक योगदानों में से एक है।

डिजिटल पारिवारिक वातावरण ने अभिभावकीय शैली के अध्ययन को नया आयाम दिया है। बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों की सुरक्षा आवश्यक है, किंतु निगरानी की प्रकृति यह निर्धारित करती है कि बच्चा इसे संरक्षण मानता है या अविश्वास। इसलिए आधुनिक अभिभावकीय परामर्श में डिजिटल नियंत्रण और पारिवारिक विश्वास के संतुलन को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए।

समग्र रूप से, बच्चों के आत्मविश्वास के स्वस्थ विकास के लिए ऐसा पारिवारिक वातावरण आवश्यक प्रतीत होता है जिसमें स्नेह और अनुशासन, सुरक्षा और स्वतंत्रता तथा मार्गदर्शन और स्वायत्तता के बीच संतुलित संबंध स्थापित हो। यही संतुलन बच्चे को केवल आज्ञाकारी बनाने के बजाय उसे आत्मनिर्भर, निर्णयक्षम, सामाजिक रूप से समर्थ और मनोवैज्ञानिक रूप से दृढ़ व्यक्तित्व में विकसित कर सकता है।

संदर्भ सूची

- **The links between parenting, self-esteem, and depressive symptoms: a meta-analysis.** *Journal of Adolescence*, २०२४. यह अध्ययन ५३ अध्ययनों और ७४ स्वतंत्र नमूनों पर आधारित है तथा अभिभावकीय समर्थन, नियंत्रण, आत्मसम्मान और अवसादी लक्षणों के संबंध का समेकित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। डीओआई: 10.1002/jad.12435.
[राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)
- **The competency-control paradox in parenting adolescents: Evidence from an Indian mixed-methods study.** *Asian Journal of Psychiatry*, खंड १२०, २०२६, लेख

१०४६६५. डीओआई: 10.1016/j.ajp.2026.104965. भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के कारण यह वर्तमान पांडुलिपि के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है।

[प्रकाशक पर अध्ययन](#)

- **The long-term effects of perceived parental control and warmth on self-esteem and depressive symptoms among Asian American youth.** *Children and Youth Services Review*, खंड १२६, २०२१, लेख १०५६६६. डीओआई: 0.1016/j.chilcyouth.2021.105999. अध्ययन में १,३६३ युवाओं के ऑकड़ों द्वारा अभिभावकीय स्नेह, नियंत्रण और आत्मसम्मान के दीर्घकालिक संबंधों का परीक्षण किया गया।
[प्रकाशक पर अध्ययन](#)
- Yang, J., Zeng, X., & Wang, X. **Associations among parental phubbing, self-esteem, and adolescents' proactive and reactive aggression: A three-year longitudinal study in China.** *Journal of Youth and Adolescence*, २०२४, ५३(२), ३४३-३५६. डीओआई: 10.1007/s10964-023-01850-2. तीन वर्षीय अध्ययन में २,४०७ किशोर सम्मिलित थे और आत्मसम्मान की मध्यस्थ भूमिका का परीक्षण किया गया।
[राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)
- Dai, B., Lin, Y., Lai, X., He, J., Du, M., Hou, X., & Zhang, G. **The effects of self-esteem and parental phubbing on adolescent internet addiction and the moderating role of the classroom environment: a hierarchical linear model analysis.** *BMC Psychiatry*, २०२४, २४, ५५. डीओआई: 10.1186/s12888-023-05489-y. अध्ययन में १,६९२ विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था।
[राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)
- **Autonomy support and psychological control by parents and teachers and children's motivation to learn: Longitudinal and interactive effects.** *Learning and Individual Differences*, खंड १२६, २०२६, लेख १०२६४६. डीओआई: 10.1016/j.lindif.2026.102949. अध्ययन में अभिभावकीय स्वायत्तता-समर्थन को बच्चों की क्षमता संबंधी आत्म-अवधारणा से सकारात्मक रूप से जुड़ा पाया गया।
- Hollander, J., Fountain, C., Mohamed, N. A., & Espinosa-Hernandez, G. **The role of parental psychological control in domain-specific self-esteem among Mexican adolescents.** २०२५. डीओआई: 10.1037/cdp0000778. अध्ययन ने मातृ एवं पितृ मनोवैज्ञानिक नियंत्रण तथा किशोरों के शैक्षिक और सामाजिक आत्मसम्मान के संबंध की जांच की।
[राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)
- **Parental psychological control and youths' internalizing symptoms in majority world contexts: A meta-analysis.** २०२५. इस समेकित अध्ययन में १८ देशों अथवा समूहों से २७,१५० बच्चों एवं किशोरों के ऑकड़ों को सम्मिलित किया गया और अधिक मनोवैज्ञानिक नियंत्रण को अधिक आंतरिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं से संबंधित पाया गया।
[राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)
- **Family environment and self-esteem development in adolescence: A replication and extension.** *Journal of Research in Personality*, २०२४. अध्ययन के दीर्घकालिक विश्लेषण में

अभिभावकीय स्नेह और निगरानी सहित अनेक पारिवारिक विशेषताओं को बाद के बाल आत्मसम्मान से संबंधित पाया गया।

- **Parent-child cohesion, self-esteem, and academic achievement: The longitudinal relations among elementary school students.** *Learning and Instruction*, खंड ७३, २०२१, लेख १०१४६७. डीओआई: 10.1016/j.learninstruc.2021.101467. पाँच समय-बिंदुओं वाले अध्ययन में ६५६ विद्यार्थियों के माता-पिता संबंध, आत्मसम्मान और शैक्षिक उपलब्धि के पारस्परिक संबंधों का परीक्षण किया गया।
- Martínez-Casanova, E., Molero-Jurado, M. M., & Pérez-Fuentes, M. C. **Self-Esteem and Risk Behaviours in Adolescents: A Systematic Review.** *Behavioral Sciences*, २०२४, १४(६), ४३२. डीओआई: 10.3390/bs14060432. यह किशोरावस्था में आत्मसम्मान के व्यापक मनोवैज्ञानिक महत्व को समझने के लिए उपयोगी व्यवस्थित समीक्षा है। [राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय अभिलेख](#)

